श्री शंकर शिक्षायतन

वैदिक शोध संस्थान

ऋषिसम्मान समारोह

<u>प्रतिवेदन</u>

श्रीशंकर शिक्षायतन (वैदिक शोध संस्थान), नई दिल्ली द्वारा दिनांक ०९ जनवरी २०२२ को ऋषिसम्मान समारोह का समायोजन किया गया। इस समारोह में संस्कृत साहित्य के प्रख्यात आचार्य, लब्धप्रतिष्ठ महाकवि, नाटककार एवं काव्यशास्त्र के महनीय समालोचक महामहोपाध्याय आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी जी को मरणोपरान्त ऋषिसम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके सुपुत्र प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी, आचार्य, संस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को समर्पित किया गया। सम्मानपत्र का समर्पण काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सह आचार्य डॉ. शरदिन्दु त्रिपाठी द्वारा किया गया। सम्मानपत्र सपर्पित करने के बाद आचार्य द्विवेदी जी की स्मृति में उनके अभिनन्दन पत्र का वाचन प्रो. रमाकान्त पाण्डेय, आचार्य, साहित्य विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर ने किया। उन्होंने अभिनन्दन पत्र में आचार्य द्विवेदी जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि, अध्यापनक्षेत्र, उनकी विविध रचनाओं, उनको पूर्व में प्राप्त प्रख्यात पुरस्कारों का समुचित उल्लेख किया।

इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रख्यात नाट्यशास्त्र मर्मज्ञ एवं पूर्व कुलपति, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने अपने वक्तव्य में द्विवेदी जी के विषय में कहा कि आचार्य द्विवेदी जी ऋषि हैं। जो ऋषि होता है वही महाकवि हो सकता है। अभिनवगुप्त के गुरु श्रीभट्टतोत ने ऋषि का स्वरूप प्रस्तुत करते हुए कहा है कि जो ऋषि नहीं है वह कविता नहीं कर सकता है-

'ना ऋषिर्कविरित्युक्त विशिष्टप्रख्यातदर्शनम्।'

जिस प्रकार अभिनव गुप्त ने अपने से पूर्व लगभग ३००० वर्ष के काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों को नवीकृत किया। उसी प्रकार आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी जी ने अपने से पूर्व के १५० वर्षों के सिद्धान्तों का नवीकरण साहित्यालङ्कारः नामक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ में किया है। ये पण्डितराज जगन्नाथ के रसगङ्गाधर के अग्रिम कड़ी के विद्वान् हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, पूर्व कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने अपने गुरु आचार्य द्विवेदी जी के व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए कहा कि आचार्य द्विवेद्री जी ने अध्यापन के समय अलंकार का लक्षण बताते हुए कहा था 'चमत्कारकत्वे सति अर्थोपस्कारकत्वम् अलङ्कारकारत्वम्।' जो कविता में चमत्कार और विशिष्ट अर्थ का द्योतन कराता हो वह अलङ्कार है। यही विषय भामह ने अपने ग्रन्थ काव्यालङ्कार में कहा है -

सैषा सर्वत्र वक्रोतिक्तिरनयार्थो विभाव्यते।
यत्नोस्यां कविना कार्यः कोऽलङ्कारोऽनया विना॥(काव्यालङ्कार २.८५)

सारस्वत अतिथि के रूप में विराजमान प्रो. केदार नारायण जोशी, पूर्व आचार्य, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन ने अपने गुरु आचार्य द्विवेदी जी के शिष्यवात्सल्य को प्रमुखता से स्पष्ट करते हुए

कहा कि आचार्य द्विवेदी जी शिष्य के हित में कार्य करते थे, इसका साक्षात् अनुभव मुझे रहा है। आचार्य द्विवेदी जी अपने ग्रन्थों का प्रकाशित कर अपने शिष्यों को उसे स्नेह पूर्वक प्रदान करते थे। वे उस ग्रन्थ पर एक सुन्दर सुललित पद्य भी लिख देते थे ।

आचार्य द्विवेदी जी के पुत्र प्रो. सदाशिव द्विवेदी जी, आचार्य संस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने अपने पूजनीय पिता आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी जी के बारे में कहा कि उन्होंने पञ्चकल्पवाद की कल्पना की है। 'अलं ब्रह्म' नामक ग्रन्थ में अलंकार को ही अलंभाव के रूप में प्रस्तुत किया है। स्वातन्त्रसंभव महाकाव्य शताब्दी का सब से बड़ा महाकाव्य है। इसमें ११० सर्गों को समाहित किया गया है। पूजनीय पिता जी ने विश्वघटनाचक्र को प्रतिदिन लिख कर इस शृंखला को आगे बढ़ाया है। काव्यशास्त्र की दृष्टि से उन्होंने पाँच कल्पवादों को स्वीकार किया है। ऊर्ध्वताकल्प, अस्फुटालङ्कार कल्प, स्फुटालंकार कल्प, अलंकार कल्प तथा अन्त में साहित्य कल्प का स्थान आता है।

आचार्य द्विवेदी जी की पुत्री डॉ. शोभा मिश्रा ने अपने उद्बोधन में परमादरणीय पिता आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी जी के रचनासंसार को व्याख्यायित करते हुए नारी की दशा का उद्घाटन उन्हीं के संस्कृत पद्यों के माध्यम से किया। उन्होंने कहा कि आचार्य द्विवेदी जी ने गार्हस्थ्यधर्म का बहुत ही सुन्दर वर्णन उत्तरसीताचरित में करते हुए कहा है कि पत्नी हमेशा प्रिया ही रहती है। हृदय से ही हृदय का ज्ञान हो सकता है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल, समन्वयक श्री शंकर शिक्षायतन ने कहा कि आचार्य द्विवेदी जी ने अपनी शिक्षा के बाद जयपुर में एकवर्ष पण्डित मोतीलाल शास्त्री के साथ शोधसहायक के रूप में कार्य किया था । उन्होंने इसका संकेत करते हुए कुमारविजय नामक महाकाव्य के आदि में लिखा है-

ततश्च वेदविज्ञानमधित्य जयपत्तने ।
वर्षमेकं समायातः काशीं पश्चादधीतये ॥

आचार्य वासुदेव शरण अग्रवाल जी आचार्य द्विवेदी जी को जयपुर ले गये थे। यह सम्मान आचार्य जी को संस्कृत विद्या में अविस्मरणीय अवदान के लिए प्रदान किया जा रहा है। परमादरणीय श्री ऋषि कुमार मिश्र ने निर्देश किया था कि जो विद्वान् संस्कृत के संरक्षण एवं संवर्धन में अपना अप्रतिम योगदान देते हैं, उनको सम्मानित करना चाहिए। इसी संकल्प के द्वारा यह सम्मान प्रत्येक वर्ष संस्कृत साहित्य के संरक्षण एवं संवर्द्धन में अपना अप्रतिम योगदान देने वाले मनीषियों को श्री शंकर शिक्षायतन इस ऋषिसम्मान से उन्हें सम्मानित करता है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री गोयनका वेद विद्यालय के वेदाचार्य श्री सन्दीप द्विवेदी के वैदिक मङ्गलाचरण के रूप में प्रस्तुत अथर्ववेदीय पृथिवीसूक्त के पाठ से हुआ। इस कार्यक्रम में देश के विविध शैक्षणिक संस्थानों से शताधिक प्राध्यापकों, शोधच्छात्रों एवं महामहोपाध्याय आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदीजी की शिष्यपरम्परा के वाहक अनेक सेवानिवृत्त विद्वानों ने सहभागिता करते हुए इसे सफल बनाया । यह कार्यक्रम गूगलमीट के माध्यम से ऑनलाईन समायोजित किया गया था। कार्यक्रम का संचालन श्रीशंकर शिक्षातन वैदिक शोध संस्थान के वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ.मणि शंकर द्विवेदी एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. लक्ष्मी कान्त विमल ने किया। अन्त में श्री गोयनका वेद विद्यालय के वेदाचार्य श्री सन्दीप द्विवेदी जी के वैदिकशान्ति पाठ से यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।